प्र मा ण - पत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि 'गोदान ग्राम जीवन का प्रतिबिम्ब' लघु प्रबंध में व्यक्त विचार मेरे अपने मूल (Original) है। यह लघु - प्रबंध इसके पहले कभी किसी भी विश्वविद्यालय में किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया था।

श्री एम्.एम्.मुलाणी
पद्मभूषण वसंतराव्दादा पाटील,
महाविद्यालय, कवठेमहांकाल,
जि: सांगली.

कवठेमहांकाल
दिनांक : २५ : ४ : १९८९

प्र मा ण - प त्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि प्रा. एम्.एम्.कुलाणी ने मेरे निर्देशन में यह लघु प्रबंध एम्.फिल् उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व योजनानुसार यह कार्य संपन्न हुआ है। जो तथ्य इस लघु प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

निर्देशिका
सौ. डॉ. शशिप्रभा जैन
एम्.ए.पी-एच्.डी.

कोल्हापुर।
दिनांक २५ : ४ : १९८९।

भू मि का

मैं ग्राम का रहनेवाला हूँ। थोडी-सी खेती भी है। बहुत-सी ग्रामीण समस्याओं का सामना भी होता है अतएव जब मेरे सामने एम्.फिल् की उपाधि हेतु विषय चुनने की समस्या आयी तो मेरा ध्यान ग्राम समस्याओं की ओर चला गया। कालेज की अवस्था से ही उपन्यास पढने की विशिष्ट रुचि के कारण और बाद में प्रिय गद्य-विधा के रूप में उपन्यास - साहित्य का अध्ययन करते हुए हिन्दी उपन्यासों में ग्राम चेतना की सशक्त और जीवन्त अभिव्यक्ति ने मेरा ध्यान सहज ही आकृष्ट किया। प्रेमचंदजी के `गोदान` को पढकर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। `गोदान` की समस्याएँ मुझे अपने ग्राम की समस्याएँ महसूस हुईं। ग्रामों के प्रति मुझे बचपन से ही लगाव था। इसलिए मैंने अपने एम्.फिल् उपाधि के लिए `गोदान` को ही चुना।

हिन्दी उपन्यास के इतिहास में प्रेमचंदजी का नाम उन महान कलाकारों में लिया जाता है, जिन पर बहुत कुछ लिखा गया है। यह बात प्रेमचंदजी की श्रेष्ठता का सबूत है। अब तक प्रेमचंदजी पर इतना लिखा जाने पर भी उनका साहित्य पुन: समीक्षण की अपेक्षा रखता है। प्रेमचंदजी उर्दू और हिन्दी के अद्वितीय उपन्यासकार है। प्रेमचंदजी के कुछ प्रारंभिक उपन्यास जो अभी तक अनुपलब्ध थे, `मंगलाचरण` शीर्षक से अमृतराय ने `हंस` में सन १९३२ में प्रकाशित किये। `मंगलाचरण` में उनके चार प्रारंभिक उपन्यास - `असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य`, `हमखुर्मा व हमसवाब`, `प्रेमा` तथा `रुठी रानी` संकलित है। हिन्दी में प्रकाशित होनेवाला प्रेमचंद का पहला उपन्यास `प्रेमा` सन १९०७ में प्रकाशित हुआ। परंतु `प्रेमा` से पहले उर्दू में और एक उपन्यास लिखा हुआ प्राप्य है -- `किशना` जो दिसम्बर, १९०६ में प्रकाशित हुआ था। इसके पश्चात् उनके अनेक उपन्यासों का निर्माण होता गया जैसे --

वरदान - अक्तूबर, १९२०, सेवासदन - दिसम्बर, १९१८,
प्रेमाश्रम - दिसम्बर, १९२१, या जनवरी १९२२,
रंगभूमि - १ जनवरी, १९२५, कायाकल्प - १९२६, निर्मला - १९२७,
प्रतिज्ञा - नवम्बर, १९२७, गबन - फरवरी, १९३१

कर्मभूमि - सितम्बर, १९३२, गोदान - १० जून, १९३६ और मंगलसूत्र - अपूर्ण।

प्रेमचंदजी प्रारंभ में गांधीवाद से प्रभावित थे। इसीकारण ही उनके प्रारंभिक उपन्यासों में राष्ट्रीय भावना प्रबल दिखायी देती है। उनके प्रत्येक उपन्यास में कोई-न - कोई समस्या अवश्य दिखायी देती है। परंतु बाद में प्रेमचंदजी की आस्था गांधीवाद से टूट गयी। प्रेमचंदजी ग्रामीणों के प्रति सजग हो गये। उन्हें ज्ञात था कि हमारा देश ग्रामों में बसता है, इसलिए उन्होंने अनेक उपन्यासों में ग्राम समस्याओं का चित्रण किया है। प्रेमचंदजी ने ग्रामों के जीवन परिवेश, बनते बिगडते सम्बन्ध, विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझते, अभावों में पलते भारतीय जीवन की धडकन को सुना और देखा है, उनके दर्द को पहचाना है और 'गोदान' के रुपमें रुपायित किया है। प्रेमचंदजी के 'गोदान' उपन्यास में चित्रित ग्राम समस्याओं का विश्लेषण इस लघु प्रबंध में किया गया है।

प्रथम अध्याय में वैदिक काल से लेकर अंग्रेजी शासन काल तक ग्राम स्थिति का चित्रण किया गया है।

द्वितीय अध्याय में 'गोदान' में किसानों का जमींदार, महाजन, बुध्दिजीवि, किसान और शहर से सम्बन्ध स्पष्ट किया गया है।

तृतीय अध्याय में 'गोदान' में ग्रामों का सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन चित्रित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में 'गोदान' में आर्थिक पक्ष को उठाया है। जमींदार, महाजन आदि के शोषण के कारण किसानों की आर्थिक स्थिति कितनी दयनीय हो जाती है, इसका विवेचन किया गया है।

पाँचवें अध्याय में धर्म की स्थिति के अन्तर्गत जाति व्यवस्था, भेदभाव, शादी-ब्याह - धार्मिक कर्तव्य, पूजा-पाठ और धार्मिक विधि तथा ब्राह्मण वर्ग का पाखण्ड आदि का वर्णन किया गया है।

अन्तिम और छठे अध्याय में 'गोदान' की अन्य समस्याओं का वर्णन किया हैं। जिनमें नौकरशाही, पुलिसव्दारा शोषण, मानवी मूल्यों का विघटन, भ्रष्टाचार आदि का वर्णन किया है। इसमें अन्त में नारी समस्याओं में विवाह समस्या - बाल-

विवाह, अन्मेल-विवाह, विधवा-विवाह, बहु-विवाह, दहेज प्रथा तथा अवैध यौन सम्बन्ध आदि का वर्णन किया है।

अन्त में उपसंहार तथा संदर्भ ग्रंथ सूचि दी है।

: ऋण - निर्देश :

प्रस्तुत लघु प्रबंध महावीर कॉलेज, कोल्हापुर के मेरे गुरु श्रध्देय सौ.डॉ.शशिप्रभा जैन जी के निर्देशन का फल है। लघु प्रबंध के विषय - निर्धारण और उसकी पूर्ति में उनका जो आत्मिय मार्गदर्शन मिला है वह अविस्मरणीय है। इस लघु प्रबंध को साकार करने का श्रेय उन्हीं को ही देता हूँ। उनसे प्राप्त स्नेह और मार्गदर्शन के लिए मैं उनका अत्यंत कृतज्ञ एवं ऋणी हूँ।

इस लघु प्रबंध का कार्य करते समय मेरे महाविद्यालय के प्राचार्य श्री.एम्.ए. पवारजी ने उत्साह और प्रेरणा दी, उनका भी हार्दिक आभारी हूँ।

महावीर कालेज, कोल्हापुर के प्राचार्य डॉ.बी.बी.पाटील जी ने तथा डॉ.सुनिलकुमार लव्टे जी ने मुझे प्रोत्साहन दिया उनके प्रति भी कृतज्ञ हूँ।

मेरे सहकारी मित्र प्रा.दिलीप मस्मे जी ने मुझे अतीव सहायता की है उनका भी मैं हार्दिक आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर ,पद्मभूषण वसंतराव दादा पाटील महाविद्यालय, कवठेमहांकाल, महावीर कालेज, कोल्हापुर के ग्रंथालयों से मुझे अतीव सहायता मिली है। मैं उन ग्रंथपालों के प्रति हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता हूँ।

अन्त में मैं उन सभी ग्रंथ लेखकों एवं मित्रों का आभारी हूँ, जिन्होंने जाने-अनजाने सहयोग देकर इस लघु प्रबंध की पूर्णता सिध्द की है।

अन्त में टंक लेखक श्री बाळकृष्ण रा. सावन्त ,कोल्हापुर इनका भी मैं आभारी हूँ। अपने प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को अंतिम रुप देने में सहायता की।

कोल्हापुर। श्री मुलाणी एम्.एम्.

तारीख : २५ : ४ : १९८९।

..